जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ।।

।। ओ३म् ।।

वर्ष - ५६ अंक - ११
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १००) रु०
आजीवन - १०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

आर्य-संसार

कार्तिक-अग्रहन : सम्वत् २०७१ वि० नवम्बर, २०१४

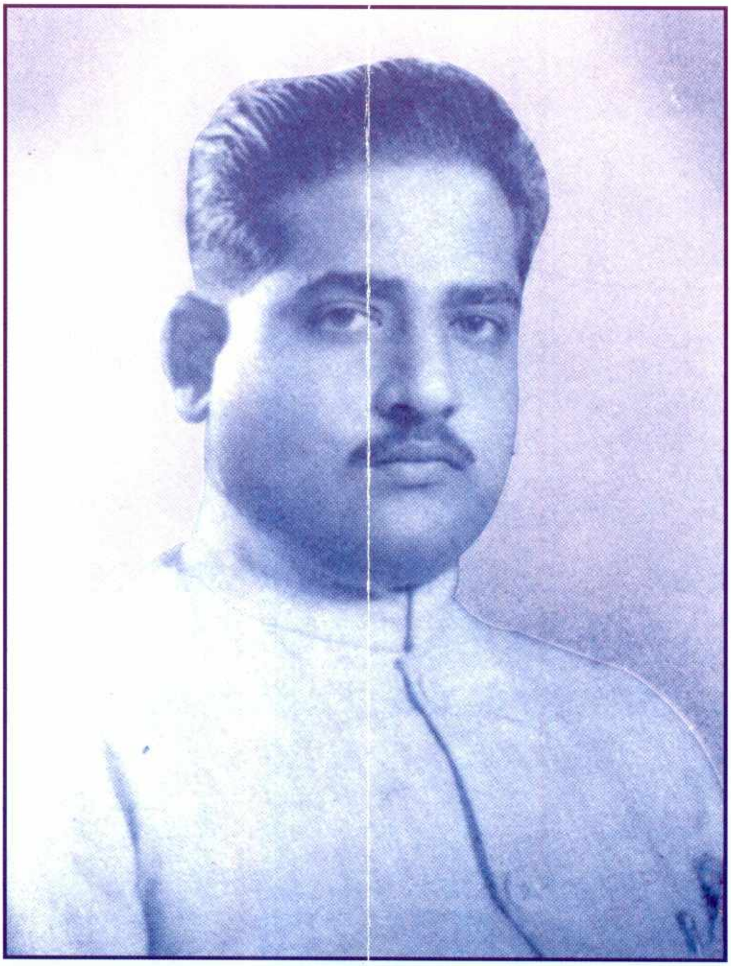

श्री आनन्दीलाल पोद्दार
जन्म-शताब्दी अंक

आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ

'आर्य संसार' के सम्पादक आचार्य प्रो० उमाकांत उपाध्याय दिवंगत –

प्रख्यात वेदवेत्ता प्रार्थना प्रवचन, वेदवैभव, वेदवंदन, वेदवीथिका, मातृभूमि वैभवम् आदि ४० से अधिक महत्वपूर्ण पुस्तकों के लेखक, इतिहासकार एवं सम्पादक तथा आर्यसमाज कलकत्ता के मासिक पत्र 'आर्य संसार' का पांच दशक से अधिक समय तक सम्पादन का दायित्व संभालने वाले शिक्षाविद् उमाकान्त उपाध्याय का वृद्धावस्था जनित बीमारियों के कारण रविवार दिनांक २ नवम्बर सुबह ५ बजे कलकत्ता के एक नर्सिंग होम में ८७ वर्ष की आयु में निधन हो गया है । आर्य समाज कलकत्ता एवं कलकत्ता की विभिन्न आर्य समाजों की ओर से श्रद्धान्जलि सभा रविवार दिनांक ९-११-२०१४ को आयोजित हुआ ।

आर्य युवा शाखा आर्य समाज कलकत्ता द्वारा रक्त दान शिविर–

दिनांक २.११.२०१४ आयोजित किया गया जिसमें लगभग ५३ लोगों ने रक्त दान किया। इस कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज कलकत्ता की युवा शाखा द्वारा किया गया । आर्य युवा शाखा के अधिष्ठाता श्री विवेक आर्य तथा शिविर के प्रभारी श्री आनन्द प्रकाश गुप्त एवं शिविर सचिव श्री विनीत जायसवाल हैं ।

शोक समाचार –

१. आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के पूर्व प्रधान श्री जगदीश प्रसाद शुक्ल का निधन ७३ वर्ष की आयु में दिनांक २९-०९-२०१४ को उनके निवास स्थान भीटी गोसाईगंज, अम्बेदकर नगर, उ०प्र० में हो गया है ।

२. आर्य समाज कलकत्ता के वरिष्ठ अंतरंग सदस्य श्री घनश्याम मौर्य का निधन ६३ वर्ष की आयु में रविवार दिनांक २८.०९.२०१४ को अचानक हृदय गति रुक जाने से आर्य समाज कलकत्ता के सभागार में हो गया है ।

३. आर्य समाज कलकत्ता के दिनांक ०५.१०.२०१४ एवं ०९.११.२०१४ के रविवारीय सत्संग सभा पर आयोजित सभा में दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई ।

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार घोषित

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समिति की एक आवश्यक बैठक दिनांक ०५.१०.२०१४ श्री राधे मोहन जी के निवास स्थान मुद्दीगंज में हुई । जिसमें सर्वसम्मति से निर्णय हआ कि इस वर्ष वैदिक साहित्य पर दिया जाने वाला २१०००/- का पुरस्कार वेद विदुषी आचार्या सूर्या देवी चर्तुवेद, पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी, को उनकी महत्वपूर्ण कृति 'ब्रह्मवेद है अथर्ववेद' पर प्रयाग में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किया जायेगा ।

राधे मोहन - प्रधान

ओ३म्

आर्य-संसार

वर्ष ५६ अंक — ११

कार्तिक-अग्रहन-२०७१ वि०
दयानन्दाब्द १९०
सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११४

नवम्बर— २०१४

मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

सम्पादक :
प्रो० उमाकान्त उपाध्याय,
एम. ए.

सह सम्पादक :
श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
सहयोगी संपादक :
श्रीमती सरोजिनी शुक्ला
श्री सत्यप्रकाश जायसवाल
पं० योगेश राज उपाध्याय

इस अंक की प्रस्तुति

१. आर्य समाज की गतिविधियाँ		२
२. इस अंक की प्रस्तुति		३
३. राष्ट्र के उत्थान के उपाय		४
४. महर्षि वचन सुधा-३८	-प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	७
५. श्री आनन्दीलाल जी पोद्दार		९
६. शिक्षा की समस्याएँ और उनका वैदिक समाधान	- डॉ० अशोक आर्य	१७
७. श्रद्धेय आचार्य राजवीर शास्त्री दिवंगत	- श्री इन्द्रजित् देव	१९
८. आर्य समाज नरवा पीताम्बरपुर		२०
९. ''यदि ईश्वर वेद ज्ञान न देता तो मनुष्य पशुवत ही रह जाता''	- श्री खुशहाल चन्द्र आर्य	२१
१०. दिवंगत श्री घनश्याम मौर्य		२३
११. मानव जीवन में प्राणायाम एवं नाड़ी शोधन की महिमा	-श्रीमती मृदुला अग्रवाल	२५

आर्य समाज कलकत्ता

१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६, दूरभाष : २२४१-३४३९

email : aryasamajkolkata@gmail.com

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है ।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा ।

राष्ट्र के उत्थान के उपाय

श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्त ऋते श्रिताः ।।

अथर्व० १२-५-१

शब्दार्थ :-

श्रमेण	=	परिश्रम क द्वारा
सृष्टाः	=	संयुक्त किया (प्रभु ने)
वित्ते	=	धन सम्पत्ति की प्राप्ति में
श्रिताः	=	आश्रित, मार्ग का अवलम्बन
तपसा	=	तपस्या और संयम से
ब्रह्मणा	=	प्रभु के प्रति विश्वास से और ज्ञान-विज्ञान की उन्नति से
ऋते	=	उचित मार्ग, न्यायमार्ग में

भावार्थ :- व्यक्ति और राष्ट्र दोनों की उन्नति के लिए प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को परिश्रम, तप और संयम से संयुक्त किया है । आर्थिक उन्नति, धनसम्पत्ति की प्राप्ति के लिए प्रभु - विश्वास, ऋताचार, न्यायोचित मार्ग का ही अवलम्बन करना मनुष्य को उचित है ।

विचार विन्दु :

१. **परिश्रम और संयम की महत्ता ।**
२. **व्यक्ति शोषण की तरह राष्ट्र-शोषण भी शोषक और शोषित, दोनों के लिए हानिकारक ।**
३. **राष्ट्रीय उत्थान में व्यक्तिगत और राष्ट्रीय उन्नति, चरित्र, सम्पत्ति सम्मिलित हैं ।**
४. **ऋत और अनृत का विवेक ।**
५. **ऋताचार की महत्ता, व्यक्ति जीवन और राष्ट्र जीवन में भी ।**

व्याख्या

किसी राष्ट्र का उत्थान किसी एक तत्व पर निर्भर नहीं करता, न आर्थिक उन्नति, न व्यवसाय का विस्तार, न सेना की शक्ति आदि भौतिक साधन ही पर्याप्त हैं । इन भौतिक साधनों के साथ ही चरित्र, संस्कृति, विद्या, अध्यात्म आदि भी राष्ट्र उत्थान के लिए अपेक्षित हैं । केवल भौतिक सम्पन्नता विलासी एवं चरित्रहीन बनाती है ।

इस मंत्र में राष्ट्र के उत्थान के उपायों का वर्णन है । वस्तुतः राष्ट्र का उत्थान आर्थिक उन्नति के साथ ही चरित्र की उन्नति, सदाचार की उन्नति और विद्या की उन्नति पर निर्भर करता है ।

मध्यकाल में पश्चिमी देशों ने अन्य तरह की स्वार्थी नीति अपनायी । उनका विश्वास आक्रमण करके दूसरे देशों में उपनिवेश बसाने पर था। इंग्लैंड, फ्रांस, पुर्तगाल आदि ने एशिया, अमेरिका, अफ्रीका आदि महाद्वीपों में अपने उपनिवेश बसा कर उन देशों का शोषण किया और वहां की धन-सम्पत्ति अपने देशों में ले गये। लोग व्यवसायी बनकर आये और राजा और शोषक बनकर इन राष्ट्रों का शोषण किया । यहां की जनता भूख से मरती रही, बिना वस्त्र के तड़पती रही और यहीं के बन्दरगाहों से लाखों टन गेहूं, चावल इंग्लैण्ड की जनता को पेट भरने के लिए, द्वितीय विश्व-युद्ध के सैनिकों को खिलाने-पिलाने के लिए यहां से छीन-छीन कर आवश्यक पदार्थ भेजे जाते रहे । यह उन्नति नहीं है, न उत्थान है । यह तो सीधा ही राष्ट्रीय लूट और डाका है । यह राक्षसी कार्य है, लुटेरे राष्ट्र का पतन है ।

प्रस्तुत मंत्र में राष्ट्र-निर्माण के पांच स्तम्भ बताए गये हैं । यह पांचों ऐसे स्तम्भ हैं जिनसे व्यक्ति का भी उत्थान होता है और राष्ट्र का भी उत्थान होता है ।

(१) राष्ट्र-निर्माण का प्रथम स्तम्भ है श्रम या परिश्रम । आलसी लोग प्रायः कहते रहते हैं-

'भाग्यं फलति सर्वत्र, न च विद्या न च पौरुषम् ।'

हिन्दी में कहते हैं -

'अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम
दास मलूका कह गये सबके दाता राम ।'

यह आलसियों का सिद्धान्त है । पुरुषार्थी लोग पुरुषार्थ को आधार बना कर कार्य करते हैं। दिनकर जी के शब्दों में-

ब्रह्मा का अभिलेख पढ़ा करते निरुद्यमी प्राणी ।
धोते शूर कुअंक भाल का बहा भ्रुओं से पानी ।

संसार में परिश्रम से बढ़कर कुछ नहीं है । शास्त्र कहते हैं -

'ना, ना श्रान्ताय श्रीरस्ति'-जो परिश्रम करके थक नहीं जाता है उसे श्री नहीं मिलती, न धन-सम्पत्ति की श्री और न ही शरीर की श्री मिलती है, आलसी को केवल दरिद्रता मिलती है ।

'उद्योगिनं पुरुष सिंहमुपैति लक्ष्मीः' । अर्थात् लक्ष्मी उस बहादुर पुरुष के पास जाती है जो उद्योग करता है, जो परिश्रम करता है।

(२) उत्थान का दूसरा स्तम्भ तप है । तप का अर्थ होता है -स्वकर्म-वर्तित्वम् अर्थात् अपने कर्म में अच्छी तरह परिश्रम करना। कोई काम छोटा या बड़ा नहीं है । अपनी-अपनी जगह सभी काम महत्वपूर्ण हैं । शासन, उद्योग, व्यवसाय, शिक्षा या श्रम, जहां भी मनुष्य हो, पूरे मन से काम करें । तप का उल्टा है - आराम और विलास, सुखमी जीवन, परिश्रम से कतराना,

आराम और सुख को प्यार करना । जीवन के कार्यों को अच्छी तरह सम्पन्न करने के लिए कुछ सुविधाओं की आवश्यकता होती है । उन्हें आराम और विलास नहीं समझना चाहिए । जिन सुविधाओं से हमारी दक्षता बढ़ती है उन्हें विलास नहीं समझना चाहिए । आज के इस नागरिक जीवन में मोटर या हवाई जहाज विलास के नहीं, उन्नति के आवश्यक साधन हैं । हां तप का एक अर्थ इन्द्रिय-निग्रह भी है । शराब पीना, नाच-रंग में डूबे रहना, विलास और पतन के मार्ग हैं । उन्हें उत्थान का आधार नहीं बना सकते ।

(३) उत्थान का तीसरा आधार है, 'ब्रह्म' ज्ञान-विज्ञान टेक्नोलाजी की उन्नति करना । आज की दुनिया में टेक्नोलाजी (तकनीक) का महत्व बहुत बढ़ गया है । जिस राष्ट्र के पास तकनीक है उनका उन्नति का आधार दुरुस्त है । अतः जब आज का संसार राकेट और मिसाइल के युग में जी रहा है, हवाई जहाज भी अब पीछे रह गये हैं, तो तकनीकी उन्नति राष्ट्र के उत्थान के लिए बहुत आवश्यक है । 'ब्रह्म' अर्थात् ज्ञान, तकनीक सभी अपेक्षित साधन हैं ।

(४) राष्ट्र के उत्थान का चतुर्थ आधार है 'ऋताचार ।' ऋताचार का अर्थ मोटी भाषा में ईमानदारी या औचित्य या चरित्र है । किसी राष्ट्र का सम्मान उसकी सच्चाई पर होता है । कई राष्ट्र, कई राष्ट्रीय चरित्र अपनी चालाकी के लिए प्रसिद्ध हो जाते हैं । धूर्तता, बेईमानी, कभी-कभी किसी-किसी राष्ट्र के चरित्र की पहचान बन जाती है । उससे न व्यक्ति का उत्थान होता है, न राष्ट्र का उत्थान होता हैं । संसार को हमारे ईमान, सदाचार, ऋताचार पर यदि भरोसा हो तो हमारी उन्नति को कोई रोक नहीं सकता है ।

(५) व्यक्ति और राष्ट्र दोनों के उत्थान का आधार है परमेश्वर के नियमों पर भरोसा करके कार्य करना । इसे ईश्वर के नियम कहें या प्रकृति के नियम कहें, सबका एक ही अर्थ है । संसार में सारे कार्य सीधे से नियम पर चल रहे हैं - कार्य कारण भाव । किसी कार्य का कोई निश्चित कारण है । पानी आग से ही गरम होगा । प्रकाश सूर्य से ही आयेगा । संसार के भौतिक नियम अपनी जगह पर अटल चल रहे हैं । उन्हीं को आधार बनाकर आज का विज्ञान ग्रह-उपग्रहों पर जा रहा है । आज की अविश्वसनीय उन्नति का आधार प्रभु के नियमों पर विश्वास या प्रभु की प्रकृति के नियमों पर भरोसा करना है ।

यह पांचों तत्व व्यक्ति की उन्नति में और राष्ट्र की उन्नति में समान रूप से आधार-स्तम्भ का काम करते हैं ।

साभार : वेद-वीथिका

•

"'महर्षि वचन सुधा'' (३८)

– प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

"'यूरोपियनों में अच्छाइयाँ''

'जो यूरोपियनों में बाल्यावस्था में विवाह न करना, लड़का-लड़की को विद्या सुशिक्षा करना-कराना, वा स्वयम्वर विवाह होना, बुरे-बुरे आदमियों का उपदेश नहीं होता, वे विद्वान् होकर जिस किसी के पाखण्ड में नहीं फंसते, जो कुछ करते हैं वह सब परस्पर विचार और सभा से निश्चित करके करते हैं, अपनी स्वजाति की उन्नति के लिये तन-मन-धन व्यय करते हैं, आलस्य को छोड़ उद्योग किया करते हैं। देखो। अपने देश के बने हुए जूते को आफिस (कार्यालय) और कचहरी में जाने देते हैं, इस देशी जूते को नहीं। इतने ही में समझ लो कि अपने देश के बने जूतों को भी कितनी प्रतिष्ठा करते हैं, उतनी अन्य-देशस्थ मनुष्यों की भी नहीं करते।''

—सत्यार्थ० एकादश समु०

व्याख्या–इस उद्धरण में स्वामी दयानन्द जी की स्वदेश भक्ति की कई बातें दिखाई पड़ती हैं। यहाँ स्वामी जी योरोपियनों की उन्नति और सम्पन्नता के कुछ कारणों को बता रहे हैं।

स्वामी दयानन्द जी खान-पान, जीवन आचरण में पवित्रता को बहुत ऊँचा स्थान देते थे। वे खान-पान और आचरण में मलिनता से बहुत असंतुष्ट रहते थे। किसी ने प्रश्न किया कि आप खान-पान और आचरण पर इतना बल देते है, किन्तु यूरोपियन तो खान-पान आदि में पवित्रता नहीं रखते, फिर भी उनकी उन्नति हुई है और निरन्तर होती जा रही है।

इस तर्क के उत्तर में स्वामी दयानन्द कह रहे हैं कि खान-पान आदि की अपवित्रता के कारण यूरोपियनों की उन्नति नहीं हुई है। यूरोप वालों की उन्नति के कुछ और ही कारण हैं। इस उद्धरण में स्वामी जी यूरोप वालों की उन्नति के कुछ कारण बता रहे हैं —

(१) यूरोप क़ी उन्नति का एक कारण यह है कि वह बाल्यावस्थाा में विवाह नहीं करते। जब स्त्री-पुरुष बड़े हो जाते हैं, वयस्क होने पर अच्छा-बुरा का बोध होने लगता है। तब अपनी पसन्द से स्वयम्वर के जैसा विवाह करते हैं। इससे उल्टे भारतवर्ष में अबोध बच्चों का भी विवाह हो जाता है, अतः भारतवर्ष की अवनति और यूरोपवालों की उन्नति हो रही है। (२) यूरोप वालों की उन्नति का दूसरा कारण यह है कि लड़का-लड़की दोनों शिक्षित होते हैं। यूरोप में लड़के तो पढ़ते ही हैं लड़कियों भी पढ़ती हैं। भारत में लड़कियों की पढ़ाई उस समय नहीं होती थी। लड़का-लड़की दोनों अपने, हितों को देखकर विवाह करते हैं। इस कारण यूरोप

वालों की उन्नति होती है । इसके उल्टे भारतवर्ष में माता-पिता लड़का-लड़की को पसन्द करते हें । कई बार बड़े विपरीत स्वभाव के लड़का-लड़की विवाह में बँध जाते हैं और सारे जीवन कष्ट भोगते रहते हैं ।

(३) गिरजाघरों में जो पादरी उपदेश करते हैं, उनका जीवन अच्छा होता है । उस समय पादरियों में मलिनता बुराई कम थी । भारतवर्ष में पण्डित, पुरोहित, मठाधीश प्रायः अच्छे चरित्र के कम होते हैं । इसलिए उनका उपदेश भी अच्छा नहीं होता । जो धर्म की जगह अच्छे उपदेश की है वहाँ गाजा, भांग, चरस आदि का सेवन होता है । इसीलिए भारतवर्ष की अवनति हो रही है।

(४) यूरोप में जनतंत्र का प्रचार है । कोई भी कार्य करना होता है तो पहले लोगों का विचार जाना जाता है । पार्लियामेंट आदि में विचार करके मत-विमत, विभिन्न विचारों पर तर्क देते है, वाद-विवाद करके फिर बहुमत से निर्णय करते हैं कि क्या होना चाहिए । अतः प्रायः अच्छा ही निर्णय लेते हैं । हमारे देश में कुछ बड़े लोगों की चलती है । वे अपने स्वार्थ की बात को लोगों पर थोप देते हैं अतः हमारे देश की उन्नति नहीं हो रही है।

(५) यूरोप के लोग परिश्रमी होते हैं, उनमें जातीयता और राष्ट्रीयता का भाव अधिक होता है । देश की सम्पत्ति को सम्पूर्ण देश के उत्थान में व्यय करते हैं । हमारे देश में राष्ट्र की सम्पत्ति भोग विलास फिजूलखर्ची में नष्ट हो जाती है । हमारे देश में या तो राजे-महाराजे अपना स्वार्थ देखते हैं या फिर मन्दिर के पुजारी, मठों के मालिक अपने स्वार्थ को ऊपर रखते हैं । अतः देश की उन्नति नहीं होती और राजा-महाराजा, पुजारी, मठाधीश स्वार्थी और विलासी होते हैं। इससे देश की उन्नति में बाधा पड़ती है।

(६) यूरोप वाले कोर्ट, कचहरी और आफिस में अपने देश के जूतों, टाई, कोर्ट पोशाक आदि को नियम से चालू करते हैं । भारतवर्ष के कपड़े, जूते, कुर्त्ता, धोती आदि को आफिस में स्वीकृति नहीं देते । अपने देश के गाऊन को स्वीकृति देते है । कोर्टो के हाकिम, वकील, एडवोकेट सबकी यूरोपियन ड्रेस निश्चित है । विश्वविद्यालय में जब डिग्री बंटती है तब भी यूरोपियन गाऊन और टोपी निश्चित की हुई है । यूरोप वाले अपने देश की प्रथा, पोशाक का जितना सम्मान करते हैं उतना भारतवर्ष के मनुष्यों का भी सम्मान नहीं करते । यह देश भक्ति उनकी उन्नति का मुख्य कारण है । अपने देश और राष्ट्रीयता का अभाव हमारी अवनति का कारण है ।

सम्पर्क : **'ईशावास्यम्'**
पी-३०, कालिन्दी हाऊसिंग एस्टेट
कोलकाता-७०००८९

फोन - ०३३-२५२२२६३६,
९४३२३०१६०२

—०—

श्री आनन्दीलालजी पोद्दार

श्री आनन्दीलाल जी पोद्दार कोलकाता के सामाजिक जगत् के अत्यन्त उदीप्त सितारे के रूप में चमकते रहे थे । जीवन आपको थोड़ा मिला था, किन्तु ४६ वर्षों की अल्पायु में ही आपकी गणना कलकत्ता के देदीप्यमान नक्षत्रों में होती है ।

श्री आनन्दीलालजी का जन्म सन् १९१४ ई० में कलकत्ता के प्रसिद्ध आर्यसमाजी पोद्दार परिवार में हुआ था । आप श्री जयनारायण पोद्दार के पौत्र और श्री रामचन्द्र पोद्दार के सुपुत्र थे । आर्यसमाजी कट्टरता और निष्ठा आपके परिवार में कई पीढ़ियों से चली आ रही थी।

श्री आनन्दीलालजी की शिक्षा-दीक्षा यहीं कलकत्ता में हुई । अपनी कुशाग्र-बुद्धि और असीम श्रमशीलता के कारण श्री आनन्दलालजी बड़ी थोड़ी ही आयु में बड़ाबाजार के व्यावसायिक जगत् में जगमगाने लगे थे और आपकी गणना हायर परचेज के कारोबार में अग्रणी के रूप में होने लगी थी ।

श्री आनन्दीलालजी का सार्वजनिक जीवन अद्भुत उपलब्धियों से भरपूर है । २५ वर्ष के अल्पायु में मारवाड़ी ऐसोशियेशन ने इस होनहार नवयुवक को अपना सभापति बना लिया था । श्री आनन्दीलालजी का नेताजी सुभाष चन्द्र बोस से निकट का सम्पर्क था और आप नेताजी के निकटस्थ सहयोगी माने जाते थे । २५ वर्ष की आयु में ही आप कोलकाता कारपोरेशन के निर्विरोध कौन्सिलर निर्वाचित हुए । शीघ्र ही डिप्टी मेयर और साल भर बाद ही कलकत्ता कारपोरेशन के मेयर चुन लिए गये । कारपोरेशन के इतिहास में इतनी कम आयु में ऐसे युवक का मेयर होना अपने आप में एक अनुपम इतिहास है । कोलकाता कारपोरेशन के इतिहास में श्री आनन्दीलालजी प्रथम हिन्दीभाषी मेयर बने । उस समय नेताजी बर्लिन में थे और वहीं से उन्होंने श्री आनन्दीलालजी को बधाई का सन्देश भेजा था ।

श्री आनन्दीलालजी पैतृक दायभाग के रूप में आर्यसमाजी संस्कारों और वैदिक निष्ठा के थे । नित्य सन्ध्या, अग्निहोत्र बड़ी कट्टरता से करते थे । सन्ध्या, अग्निहोत्र से पूर्व प्रातराश भी न लेने का नियम जीवन में था । आर्यसामाजिक निष्ठा के कारण तथा तीन-चार पीढ़ियों का इतना पुराना, इतना सम्पन्न आर्यसमाजी सेठ परिवार आर्यसमाजी गतिविधियों का केन्द्र बना रहता था । सुहरावर्दी की मुस्लिम लीगी मिनिस्ट्री का ऐसे१ प्रतिभासम्पन्न प्रभावशाली युवक आर्य समाजी एवं कांग्रेसी नेता से असन्तुष्ट रहना अस्वाभाविक न था । सन् १९४६ में जब बंगाल में मुस्लिम लीग मन्त्रिमण्डल बना और बहुत सारे हिन्दुओं ने इनके पैतृक निवास-स्थान में शरण ली, उस समय सुहरावर्दी की मुस्लिम लीगी साम्प्रदायिक सरकार ने बड़ी निर्ममता और निष्ठुरता से आपके घर की तलाशी ली, किन्तु सुहरावर्दी हाथ मलता रह गया और आनन्दीलालजी जैसे प्रतिष्ठित नेता और पोद्दार जैसे सम्मानित परिवार पर हाथ न लगा सका । उस समय श्री आनन्दीलालजी और श्री किशनलालजी पोद्दार के भवन दंगा पीड़ित हिन्दुओं के लिए शरणार्थी शिविर के रूप में बदल गये थे । श्री आनन्दीलालजी की माताजी, जिन्हें श्रद्धा और प्यार से ताईजी की उपाधि मिली थी, स्वयं स्वयंसेविका बनकर शरणार्थी बच्चों को दूध पिलाती थीं । पोद्दारजी के मकान से बसों और गाड़ियों में भरकर शरणार्थियों को आर्यसमाज मन्दिर और कन्या विद्यालय

के शरणार्थी शिविरों में भेजा जाता था ।

बिहार भूकम्प के समय श्री आनन्दीलालजी महात्मा खुशहाल चन्द जी (आनन्द स्वामी जी) की प्रेरणा से उन्हीं के साथ साधन-सामग्री लेकर सेवाकार्य के लिये बिहार स्वयं गये थे । कई शिविरों में काफी दिनों तक आपने सेवाकार्य किया था । धनवान धन तो दे सकते हैं किन्तु एक श्री आनन्दीलालजी ही थे जो धन तो भरपूर देते ही थे स्वयं भी ऐसे कार्यों में स्वयंसेवक के रूप में तत्पर हो जाते थे ।

श्री आनन्दीलालजी यावज्जीवन आर्यसमाज कलकत्ता के सदस्य रहे । भरपूर दान देते रहे। यों तो पोद्दार परिवार से श्री किशनलालजी आयु में बड़े और आर्यसमाज कलकात्ता में अग्रणी रहे किन्तु श्री आनन्दीलालजी भी संगठन में आगे आते रहे और आर्यसमाज के उप-प्रधान भी बने । श्री आनन्दीलालजी आर्यसमाज के ट्रस्टों के ट्रस्टी भी बने । सन् १९५९ई० में जब आर्य विद्यालय ट्रस्ट बना तो जयनारायण पोद्दार ट्रस्ट की ओर से श्री आनन्दीलालजी पोद्दार ट्रस्ट के ट्रस्टी बने ।

श्री आनन्दीलालजी कांग्रेस के भी प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता थे । आप पश्चिम बङ्ग विधानसभा के अनेक बार विधायक भी चुने गये । कलकत्ता ट्राम कम्पनी के आप प्रथम भारतीय डायरेक्टर थे । कलकत्ता के प्रसिद्ध हिन्दुस्तान क्लब के आप संस्थापक थे । श्री आनन्दीलालजी मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के भी सभापति चुने गये थे ।

३० जुलाई सन् १९६० ई० को ४६ वर्ष की अल्पायु में आपका देहान्त हो गया, किन्तु यावज्जीवन आप बड़ाबाजार के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जगत् पर पूर्णिमा के चन्द्रमा की तरह आह्लादकता के साथ चमकते रहे । जनसेवा के कार्यों में आनन्दीलालजी जैसा व्यक्ति मिलना कठिन है ।

(आर्य समाज कलकत्ता के शतवर्षीय इतिहास से)

कलकत्ता, १३ जनवरी १९४५ को राष्ट्रभाषा प्रचार के वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर श्री आनन्दीलाल पोद्दार जी द्वारा दिया गया सभापतित्व भाषण

उपस्थित सज्जनों, बहनों और भाइयों,

आज राष्ट्र-भाषा प्रचार सभा के वार्षिक सम्मेलन का सभापतित्व मुझ पर प्रदान कर, आपने न केवल मुझे अपना कृतज्ञ ही बनाया है, बल्कि मैं अनुभव करने लगा हूँ कि मैं भी उत्कलवासियों में से एक हूँ । राष्ट्र-भाषा प्रचार के प्लेटफार्म पर एकत्रित सभी बहन-भाई अपने को एक दूसरे के निकट पाते हैं । देश के कोने-कोने में बसे हुए भाइयों को एक-सूत्र में बाँधनेवाली, एक भाषा, एक भाव प्रदान करने वाली इस महान राष्ट्रभाषा हिन्दी को बारम्बार प्रणाम है, जो देश-प्रेम का अपूर्व पाठ पढ़ाती है। यह राष्ट्रभाषा का ही जादू है, जो हमें इतनी दूर से, एक अपरिचित देश में आप लोगों के निकट खींच लाया। राष्ट्र-भाषा प्रचार के निमित्त उपस्थित सभी बहन-भाई अपने को राष्ट्रभाषा के महायज्ञ के होता मान कर गौरव से मस्तक उन्नत किये हुए हैं क्योंकि हम एक क्षण के लिए नहीं भूल सकते कि हमारा

यह कार्य राष्ट्रीय संग्राम को सफल बनाने, देश को संगठित कर एक झंडे के नीचे, आजादी के वातावरण में लाने का एक नम्र प्रयास है। उस महान ध्येय की पूर्ति के लिये पहली और अत्यधिक आवश्यक मजबूत सीढ़ी है और इसके साक्षी हैं, स्वतंत्र देशों के इतिहास। जिस राष्ट्र की एक राष्ट्र-भाषा नहीं, उस राष्ट्र में एक भाव कदापि संभव नहीं। वह राष्ट्र अपनी जनता को जागरूक रखने में कदापि सफल नहीं हो सकता और न समस्त संसार के समक्ष कोई संगठित प्रयास कर सकता है। उस राष्ट्र की स्वतंत्रता सदैव खतरे में है, क्योंकि एक देश के कोने-कोने में बसी हुई जनता के पास सन्देश पहुँचाने के निमित्त कोई साधन नहीं। उन्हें एक ध्येय, एक प्रस्ताव के लिए कन्धे से कन्धा भिड़ा कर खड़ा करने के लिए लड़ने और मरने के लिए एक आवाज-एक भाषा चाहिए और भारत के स्वतंत्रता युद्ध में आह्वान करने के लिए हमें एक भाषा, एक राष्ट्रभाषा की आवश्यकता है और वह स्थान, वह महत्वपूर्ण उपाधि, हमने हिन्दी को प्रदान की है। हिन्दी क्या इसके योग्य है ? इसके पक्ष में दलीलें देना अब अपने को पच्चीस वर्ष पीछे ले जाना होगा। राष्ट्रभाषा के सिंहासन पर हिन्दी विराजमान है और उसका झंडा देश के कोने-कोने में फहराना समवेत बहनों और भाइयों का व्रत, ध्येय और जीवन की एक महान तपस्या है।

आज हम विश्व-इतिहास के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और निर्णायक घड़ी में अपनी शक्ति, अपने प्रचार के लेखा-जोखा का सिंहावलोकन करने के निमित्त एकत्रित हुए हैं। विदेशों के साथ ही हमारा देश भी विभिन्न समस्याओं का सामना कर रहा है। हमारे बहादुर सैनिक आज हमसे दूर हैं। हमारे आपके बीच में प्रचार करनेवाले स्थायी कार्यकर्ताओं की टोली क्षीण हो गई है। अनेक परिचित आज इस सम्मेलन में एकत्रित नहीं हो सके हैं। आपकी सभा के प्राण श्री अनुसूयाप्रसादजी पाठक पास होते हुए भी दूर हैं, मुक्त होते हुए भी बन्धन में है और कार्य-प्रगति में यह एक जबर्दस्त रुकावट है। आज देश की प्रमुख संस्थाओं को इस समस्या का सामना करना पड़ रहा है। यों ही कार्यकर्ता थोड़े हुआ करते हैं और अगर उनमें से भी एक संख्या हमसे बिछुड़ जाये, तो गति-भंग अनुभव करते हैं किन्तु तभी हमारे व्यक्तिगत बल और ध्येय के प्रेम की अग्नि-परीक्षा होती है। हमें अपने नेताओं के अभाव में स्वयं अपने को ऊँचा उठाना चाहिए। अगर आज तक हम किसी कार्य को महान और आवश्यक बनाते आये हैं, तो हमारा पुनीत कर्तव्य हो जाता है कि कार्यकर्ताओं के अभाव में कार्य बन्द न होने दें। अगर हम कुछ नवीन प्रगति नहीं कर सकते हैं, तो कम-से-कम चल रहे कार्य को चलाते जायें, उन कार्यकर्ताओं की अग्नि को प्रज्ज्वलित रखें। उसे बुझने न दें, तभी हमारा प्रेम सच्चा है, तभी हमारा ध्येय के प्रति आकर्षण सच्चा है और इसी तराजू, इसी मापदंड के अनुसार ही बता सकेंगे हम, कि हमने किस कार्य को कहाँ तक अपनाया, अन्यथा हमें मानना पड़ेगा कि गत वर्षों की तपस्या, समय और धन का व्यय अभी रंग नहीं लाया है और हम अभी ककहरा ही पढ़ने में लगे हुए हैं। इस दृष्टि से आज के सम्मेलन पर दृष्टिपात करते हुए, मुझे प्रसन्नता होती है कि प्रमुख कार्यकर्ताओं के दूर होते हुए भी, गत दो वर्षों की भीषण उथल-पुथल के बाद भी आपका राष्ट्रभाषा प्रेम और उसके लिए लगन प्रशंसनीय है और

ईश्वर हमें वह समय दिखावे जब हमारे आत्मीय कार्यकर्ता हमारे बीच हों, हम उनका मार्ग प्रशस्त करें और राष्ट्रभाषा के प्रचार का पाञ्चजन्य बनें ।

राष्ट्र-भाषा प्रचार की रजत जयन्ती

अधिकृत उल्लेख देखने पर पता चलता है कि राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य होते पच्चीस वर्ष बीत गये। पता चला है कि देश की सर्वोपरि राष्ट्रभाषा प्रचार संस्था दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, इस मार्च मास में कार्य की रजत जयंती मना रही है । मेरे विचार में इसका आयोजन न केवल मद्रास में ही बल्कि देशव्यापी होना चाहिए ! हम एक ही तिथि पर स्थान-स्थान पर सभाएं कर निश्चित प्रस्ताव पास करें एवं राष्ट्र-भाषा की उन्नति और प्रचार के निमित्त कुछ ठोस कार्यक्रम बना कर कार्य चलायें। एक दो ही ठोस स्कीम बनाने में कोई आपत्ति नहीं, अगर हम उतना ही कार्य अग्रसर कर लें तो इस जयंती उत्सव की कार्यवाही से देश के विभिन्न भागों में कार्य करने वाले हमारे कार्यकर्ताओं को बल मिलेगा और प्रत्येक स्थान पर उपयुक्त धनराशि एकत्रित कर स्थानीय प्रचार-कार्य में व्यय की जाये। इस सम्बन्ध में विस्तृत विवरण एवं परामर्श, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री से प्राप्त किया जा सकता है । हम अगर एक अखिल भारतीय समिति का गठन कर उसके तत्वावधान में रजत जयन्ती मनायें, तो मेरे विचार में अधिक उत्तम होगा ।

राष्ट्र-भाषा प्रचार – रचनात्मक कार्यक्रम का एक अंग

राष्ट्र-भाषा की आवश्यकता पर मैं आरम्भ में ही संक्षेप में कुछ कह गया हूँ और अब वर्तमान शीर्षकान्तर्गत विशेष कुछ नहीं कहना है । मैं तो आप लोगों का ध्यान अपने महान आदरणीय सेनापति महात्मा गाँधी के उस कार्यक्रम की ओर आकर्षित करता हूँ, जिसमें उन्होंने मुक्त कांग्रेस कार्यकर्ताओं को कुछ ठोस देशव्यापी कार्यों की तालिका देते हुए, राष्ट्र-भाषा प्रचार को भी आवश्यक बताया है। देश के ग्राम-ग्राम में हमारे कार्यकर्ता कार्य करेंगे, उनका राष्ट्रभाषा का प्रचार-कार्य भी एक महत्वपूर्ण अंग रहेगा । इस तरह हमें राष्ट्रभाषा हिन्दी का संदेश घर-घर पहुँचाने में अपूर्व सहायता प्राप्त होगी और हम इसे एक राष्ट्रीय आवश्यकता बताते हुए जनता को और भी तैयार कर सकेंगे । मुझे विश्वास है कि हमारे कार्यकर्ता राष्ट्र-भाषा की विषद् व्याख्या करते हुए कई वक्तव्य दिये हैं । भारत-कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू ने गत सप्ताह कलकत्ते में एक वक्तव्य के सिलसिले में स्पष्ट कहा कि एक राष्ट्रभाषा की पहली आवश्यकता हमारी है और वह स्थान हिन्दी ही के लिए है । समस्त देश ने, सभी नेताओं ने, भले ही वे हिन्दी-भाषी हों या नहीं, भले ही उन नेताओं की मातृभाषा हिन्दी हो या नहीं, एकमत से राष्ट्रभाषा की आवश्यकता बताते हुए हिन्दी को ही मुख्य जनभाषा माना है।

किन्तु हमें एक भाषा और भाव के नाम पर किसी व्यक्ति, किसी संस्था अथवा स्वयं सरकार द्वारा ही राष्ट्रभाषा की ओट में कोई राजनैतिक चाल सह्य नहीं हो सकती जैसी कि आज भारत सरकार द्वारा संचालित रेडियो विभाग में दिखायी पड़ रही है । अतः हम आज राष्ट्रभाषा और एकता के इस महान

मंच से स्पष्ट घोषणा करेंगे कि रेडियो की भाषा नीति असह्य है । आज अखिल भारतीय रेडियो विभाग द्वारा जिस भाषा का प्रचार किया जा रहा है, उस रायटर भाषा से हमारी संतान का भविष्य अन्धकारपूर्ण हो जायेगा । हम कहीं के नहीं रहेंगे, हमारा गत वर्षों का कठिन परिश्रम मिट्टी में मिल जायेगा ।

हम राष्ट्रीयता के हिमायती हैं । हमारे लिए मजहब और विभिन्न भाषाओं की लड़ाई नहीं है । हमारा मजहब और धर्म राष्ट्रधर्म है और हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है । हम किसी संस्था द्वारा आपसी झगड़े की नीति का शिकार नहीं होना चाहते । हमारा किसी भाषा उसके साहित्य से झगड़ा नहीं और न तो हम इन राजनैतिक चालों के पीछे अपना समय नष्ट करना चाहते हैं । खड़े किये गये, किन्तु हमारी चुप्पी भी कहीं अनर्थ को प्रोत्साहन न दे, इसलिये राष्ट्रीयता के इस महान् प्लेटफार्म से भी हमें रेडियो भाषा नीति का जोरदार विरोध करना पड़ेगा । वर्तमान चाल में साम्प्रदायिकता या भाषाओं के लिए शहीद बनाने की जो भावना है, उसका हम घोर विरोध करते हैं । प्रत्येक भाषा और साहित्य का अपना स्थान है । किन्तु, अखिल भारतीय रेडियो से जब समस्त देश के लिए कोई प्रोग्राम ब्राडकास्ट हो, तो वह राष्ट्रभाषा हिन्दी में हो । विभिन्न मजहबों और भाषाओं की सन्तुष्टि के लिए अलग-अलग भिन्न प्रोग्राम बनाये जा सकते हैं । मैं आशा करूँगा कि देशव्यापी असंतोष को ध्यान में रखते हुए, ब्राडकास्टिंग विभाग के माननीय सदस्य शीघ्र ही कोई उचित हल निकालेंगे अन्यथा मैं जोरदार अपील करूँगा राष्ट्र भाषा प्रचार सभाओं से कि वे इस नवीन विदेशी राष्ट्रभाषा का जोरदार विरोध करें और इसमें हम अपने अहिन्दी भाषियों का भी सहयोग प्राप्त करेंगे क्योंकि रेडियो की वर्तमान भाषा, किसी की भाषा नहीं, एक वर्णसंकरी सृष्टि है ।

पूर्वी भारत राष्ट्र-भाषा प्रचार सभा

यह नाम आपके लिए कोई नया नहीं है । गत वर्षों में, अगस्त संकट के पूर्व आपके प्रांत के विभिन्न स्थानों में इस सभा के पदाधिकारी एवं प्रचारक आते रहे और आपके कार्यों को प्रोत्साहित किया । वर्तमान में जहाँ तक मुझे पता है, यह सभा शिथिल पड़ी है । किन्तु वर्तमान वातावरण एवं विभिन्न प्रांतों में राष्ट्र-भाषा के प्रति प्रेम देखते हुए मेरी समझ में हमें इस सभा को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है । इस सभा द्वारा ही हम बंगाल, उड़ीसा एवं आसाम को संगठित कर सकेंगे। बंगाल प्रांत में भी राष्ट्र-भाषा प्रचार कार्य बड़ा मंद हो रहा है एवं आशाजनक क्षेत्र देखते हुए शीघ्र ही इस ओर कुछ करने की आवश्यकता है । उड़ीसा में तो सभा के कार्यकर्ताओं ने प्रशंसनीय जमीन तैयार कर ली है एवं केवल उस पर बाग लगाने की आवश्यकता है । ऐसी अवस्था में वर्तमान सम्मेलन में उपस्थित उपर्युक्त सभा के कई पदाधिकारियों को देखकर मैं आज इस विषय को छेड़ बैठा हूँ और उनसे प्रार्थना करता हूँ कि आप पुनः सभा के कार्यों को आगे बढ़ायें । हमारा सहयोग हर तरह से सदैव आपके साथ रहेगा । आज का समय उपयुक्त समय है और मैं आशा करता हूँ कि हम निश्चय करेंगे कि पूर्व भारत में पुनः राष्ट्र भाषा के जोरदार प्रचार के लिए हम तत्पर होंगे ।

पिछले दिनों उड़ीसा में हिन्दी के प्रति असद् व्यवहार की चर्चा मैंने पत्रों में पढ़ी थी और उन रिपोर्टों से पता चलता था कि उड़ीसा विश्वविद्यालय प्रांत के स्कूलों में हिन्दी माध्यम के द्वारा शिक्षा की अनुमति देने को तैयार नहीं । मेरी राय में जो स्कूल हिन्दी भाषियों द्वारा संचालित हों, अथवा जिस स्कूल में हिन्दी भाषियों की संख्या अधिक हो, उस स्कूल को हिन्दी माध्यम के द्वारा शिक्षा की अनुमति देने में विश्वविद्यालय के अधिकारियों को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए । जिन स्कूलों में सभा की ओर से प्रबन्ध किया जाये, उन स्कूलों में माध्यम न होने पर भी ऐच्छिक विषय का स्थान तो हिन्दी को मिलना ही चाहिए । मुझे विश्वास है कि विश्वविद्यालय के अधिकारियों को इसमें कोई आपत्ति नहीं होगी और राष्ट्रभाषा हिन्दी को उचित स्थान प्राप्त होगा ।

जन्मदिवस पर विशेष –

हर क्षेत्र में अपना डंका बजाया आनंदी बाबू ने

राजस्थान के शेखावटी जिले के मारवाड़ी परिवार में जन्मे आनंदीलाल पोद्दार सेठ रामचंद्र पोद्दार के बेटे थे । व्यवसाय में उन्नति के लिए औपनिवेशिक युग के दौरान उक्त परिवार कलकत्ता शिफ्ट हो गया । समाजकल्याण व राजनैतिक मुद्दों पर गहन योगदान के कारण आनंदी लाल पोद्दार ने आम व्यवसायियों से अपनी अलग पहचान बनायी । वे नेताजी सुभाष चंद्र बोस के राजनैतिक दृष्टिकोण से काफी प्रभावित थे । उन्होंने ब्रिटिश उपनिवेश के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन में नेताजी का साथ दिया था । नेताजी ने उन्हें कोलकाता नगर निगम के तत्कालीन वार्ड नंबर ८ से अपनी पार्टी के पार्षद का टिकट भी दिया था, उनके खिलाफ कोई खड़ा नहीं हुआ और वे निर्विरोध जीत गये। वर्ष १९४४-१९४५ में ३१ वर्ष की उम्र में कलकत्ता कारपोरेशन जिसे अब कलकत्ता म्यूनिसिपल कारपोरेशन कहा जाता है, के वे सबसे कम उम्र वाले हिंदीभाषी मेयर चुने गये । उनके मेयर बनने पर नेताजी ने बर्लिन रडियो पर आनंदी लाल पोद्दार को बधाई भी दी । इंडियन नेशनल काँग्रेस से हमेशा से जुड़े आनंद्री लाल पोद्दार ने पश्चिम बंगाल के विधानसभा के सदस्य के रूप में १९६१ यानी मरते दम तक अहम भूमिका निभायी । महान व्यक्तित्व के आनंदी लाल पोद्दार को सम्मान जताने हेतु पश्चिम बंगाल विधानसभा में, कलकत्ता म्यूनिसिपल कारपोरेशन व महाजाति सदन में उनकी एक तस्वीर भी लगायी गयी है । आनंदी लाल पोद्दार अलग तरह के नेता थे । वे उन दिनों कांग्रेस पार्टी के नेता व पूर्व मुख्यमंत्री डॉ० बी.सी. राय के काफी करीबी थे । साथ ही विरोधी दल के नेता श्री ज्योति बसु व फारवर्ड ब्लॉक और कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के भी बेहद करीब थे। विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के नेतां उनसे सुझाव लेने आया करते थे । शायद यही कारण है कि सभी ने उनका हमेशा स्वागत किया और वे हर चुनाव में जीते । बड़ाबाजार के जोड़ासांको विधान सभा क्षेत्र में उन्हीं के किये गये कामों का नतीजा है कि उनकी मृत्यु के बाद भी उनके भाई, बेटे व भतीजों ने इसी इलाके से करीब ७ बार चुनाव जीता । सफल राजनीतिज्ञ होने के अलावा उन्होंने समाज पर भी एक ऐसी छवि छोड़ी जिसे लोग हमेशा याद करेंगे । परम्परागत

मारवाड़ी सोच वाले समाज में पैदा होने के बावजूद उन्होंने अपने बेटे की शादी की सारी रस्में एक दिन में सम्पन्न करवायीं और किसी भी तरह के लेनदेन से साफ इनकार करते हुए एक नया उदाहरण पेश किया। राष्ट्रीय एकता व साम्प्रदायिक शांति में विश्वास रखने वाले आनंदी लाल पोद्दार कभी भी हिंदू और मुस्लिम में फर्क नहीं समझा करते थे। वर्ष १९४६ में साम्प्रदायिक दंगों के दौरान उन्होंने अपने घर का दरवाजा भुक्तभोगियों के लिए खोले रखा था। कई वाणिज्यिक उपक्रम जिसमें लाभ से ज्यादा लोगों की सुविधाएँ देखी जाती थीं, उनमें वे आगे रहते थे। उन्होंने लोगों को बिना डाउन पेमेंट के टैक्सी, बस व अन्य वाहन खरीदने का मौका दिया ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग अपने पैर पर खड़े हो सकें। उन्होंने सामाजिक जरूरतों को समझा, उनकी कोशिशों के कारण ही वे कलकत्ता ट्रामवेज कंपनी लिमिटेड के पहले भारतीय निर्देशक चुने गये। आर्ट व कल्चर की बात करें तो उस्ताद बिसमिल्लाह खान, उदय शंकर, पन्नालाल बोस व पंडित जसराज के साथ उनके रिश्ते काफी मधुर थे। खेल संगठनों के साथ भी उनका अच्छा संपर्क था। कोलकाता के बेहद जानेमाने हिन्दुस्तान क्लब की उन्होंने स्थापना की। उन्होंने आर्य समाज की परम्पराओं व स्वामी दयानंद सरस्वती की सीखों पर हमेशा अमल किया। उनके व्यवहार के कारण ही लोग उन्हें प्यार से सेठ बुलाया करते थे। जो भी उनसे एक बार मिल लेता वह एक ही बात दोहराता, आनंदीलाल पोद्दार हमारा है। उनके प्रति सम्मान जताने के लिए कोलकाता की मुख्य सड़कों में से एक यानी रसल स्ट्रीट का नामकरण कर आनंदीलाल पोद्दार सरणी कर दिया गया। उन्होंने अपनी जिंदगी का ज्यादातर समय एक संयुक्त परिवार में रहकर बिताया। बड़ाबाजार में तीन पीढ़ियों वाले इस घर में ५० सदस्य एक साथ रहते थे। घर के हर सदस्य का आनंदीलाल जी से खास रिश्ता था। अपनी छोटी सी जिंदगी में उन्होंने अपने कई दोस्तों की जिंदगी संवारने में मदद की। वे अपनी फिएट कार ड्राइव करना हमेशा पसंद करते थे। आनंदीलाल पोद्दार ने एक समाज सुधारक, देश भक्त, भावुक, स्नेह से परिपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में अपनी पहचान बनायी थी। आम लोगों से अलग उनके स्वभाव ने ही उन्हें एक लेजेंड का दर्जा दिया। मौत के इतने वर्षों के बाद भी गर्व करते हैं समाज व परिवार के लोग आज भी उनकी यादें लोगों के जेहन में ताजा है।

रवि पोद्दार : आनंदी बाबू के बेटे रवि पोद्दार ने बताया कि उनके पिता को बंगाल के लोगों से विशेष स्नेह था। बंगाली व मुस्लिम समुदाय के लोगों के योगदान की वजह से ही उन्होंने राजनीति में अपनी पहचान बनायी।

केवल ११ साल की उम्र में अपने पिता को हमेशा के लिए खोने वाले इस बेटे ने कहा कि जब मैं दूसरों की जुबान से उनके बारे में इतनी बातें सुनता हूँ तो यकीन नहीं होता कि मेरे पिता आज भी इन लोगों के दिल के इतने करीब हैं। उन्होंने कहा कि वे खुद से पहले दूसरों की जरूरतों का ख्याल रखते थे।

नरेन्द्र पोद्दार ने कहा कि उन्होंने छोटी सी अपनी जिंदगी में जितने लोगों के दिलों को छुआ, किसी आम इंसान के लिए ऐसा कर पाना संभव नहीं। मेरे पिता जमीन से जुड़े हुए इंसान थे। उन्होंने हर संप्रदाय के लोगों के लिए काम किया था।

आनंदी बाबू के पोते **सुबीर पोद्दार** ने कहा कि यह मेरा दुर्भाग्य है कि मेरे जन्म से एक वर्ष पहले ही उनका देहांत हो गया था । मगर बचपन से लेकर आज तक मैं उनके गुणगान सुनकर बड़ा हुआ । हमेशा से सुनते आया हूँ उनके महान व्यक्तित्व के बारे में । एक बार मेरी गाड़ी में कुछ समस्या हो रही थी और मुझे घर तक टैक्सी से लौटना पड़ा । जब मैं घर पर उतरा तो टैक्सी वाले ने भाड़ा लेने से साफ मना कर दिया । टैक्सी वाले ने कहा कि अरे ! ये तो आनंदी बाबू का घर है । मैं आज जो भी हूं उन्हीं की बदौलत हूं । मैं आपसे पैसे नहीं ले सकता, यह कह कर वह चला गया । मगर मेरे दादा जी की जो छवि ड्राइवर ने मेरे समक्ष पेश की वह मैं कभी भूल नहीं सकता । मैं खुश हूं कि मैं उनका पोता हूँ और गर्व भी महसूस करता हूँ ।

आनंदी लाल पोद्दार की बड़ी बेटी **सुशीला आलमाल** ने बताया कि उनके पिता बेहद नम्र स्वभाव के थे । बेटों की तुलना में उन्हें बेटियों से खास लगाव था । वे मुझे बहुत मानते थे । इतने सरल और बड़े व्यक्तित्व की बेटी होने पर गर्व है मुझे ।

गुरुकुल होशंगाबाद का १० ३वां वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म०प्र०) का १०३ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ५, ६, ७ दिसम्बर २०१४ को आयोजित किया जा रहा है । इस उत्सव में देश के ख्यातनाम विद्वानों द्वारा विविध विषयों पर उपदेश व प्रवचन होंगे तथा अध्ययनरत ब्रह्मचारी छात्रों के पाणि तथा वाणी के मनोहर कार्यक्रम देखने को मिलेंगे ।

आप समस्त गुरुकुल प्रेमी सज्जनों से निवेदन है उक्त कार्यक्रम में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें व विद्वानों के प्रवचनों से लाभ लें ।

भावत्क :

आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक

सचिव

आर्ष गुरुकुल समिति

होशंगाबाद (म०प्र०) -४६१००१

आर्य समाज कलकत्ता वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कलकत्ता का वार्षिकोत्सव दिनांक २०.१२.१२०१४ से २८.१२.२०१४ तक बड़े उत्साह के साथ स्थानोय ऋषीकेश पार्क में मनाया जायेगा जिसमें २०.११.१४ को अपराह्न २ बजे से शोभायात्रा एवं २१ से २८ तक विविध कार्यक्रम होगें । आमंत्रित विद्वान है आचार्य धर्मवीर जी, डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार एवं भजनोपदेशक श्री कुलदीप विद्यार्थी है ।

शिक्षा की समस्याएँ और उनका वैदिक समाधान

डॉ० अशोक आर्य

भारत ही नहीं विश्व की शिक्षा अनेक समस्याओं से घिरी है । इस शिक्षा का स्वरूप क्या है ? इसके साथ ही यह भी विचारणीय विषय है कि आधुनिक महाविद्यालयों में धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का विस्तार होना चाहिए या नहीं ? यह शिक्षा आज के इन विद्यालयों में प्रयोग होना चाहिए या नहीं ? नैतिक शिक्षा दें तो किस रूप में दें तथा न दें तो क्यों न दें ? इस समस्या का समाधान हमें वेद में खोजना है । सहशिक्षा का प्रश्न भी इस समय विश्व के शिक्षाविदों के लिए एक विचारणीय प्रश्न है ? आज के शिक्षाशास्त्री इन समस्याओं का समाधान खोजने में असफल से ही दिखाई देते हैं । यदि वास्तव में ही इन समस्याओं का समाधान खोजना है तो आओ वेद की शरण में बैठ कर इन का समाधान खोजें ।

प्राचीन काल से ही विश्व में ज्ञान के पिपासु, जिसे आज विद्यार्थी कहा जाता है, ब्रह्मचारी कहा जाता था, जिसका अर्थ ही था कि ब्रह्म अर्थात् विद्या में विचरण करने वाला । इसे परमेश्वर में विचरण करने वाला भी कहा जा सकता है । ब्रह्म में विचरण का अर्थ है ब्रह्म वेद का अध्ययन अथवा विद्यार्थी, शिक्षार्थी, ब्रह्मचारी । अथर्ववेद के अध्याय ११ सूक्त ५ के मन्त्र संख्या २४ में इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए इस प्रकार बताया गया है :

ब्रह्मचारी ब्रह्म भ्राजद्बिभर्ति तस्मिन्देवा अधि विश्वे समोताः ।
प्राणापानो जनयन्नाद् व्यानं वाचं मनो हृदयं ब्रह्म मेधाम् ।। अथर्व ११.५.२४।।

जिस ब्रह्मचर्य से सब प्रकार की शक्तियों का विकास होता है, वह ही शिक्षा का आधार हो सकता है । जब तक हम इस तथ्य को नहीं समझते, तब तक हम उत्तम शिक्षा, नैतिक शिक्षा, शिक्षा की आधारभूत समस्या का समाधान नहीं खोज सकते, यह भी नहीं समझ सकते कि नैतिक शिक्षा की आज के स्कूलों में, आज के महाविद्यालयों में, जिसे हम आज कालेज के नाम से जानते हैं, आवश्यकता है भी या नहीं तथा यदि है तो क्यों ?

ब्रह्मचारी का चरित्र निर्माण से विशेष सम्बन्ध होता है । पंडित धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड जी ने तो अपनी पुस्तक **सब समस्याओं का समाधान वेद** में यहाँ तक लिखा है कि **''जो सदाचार सम्पन्न सच्चरित्र व्यक्ति नहीं है, वह कभी परम पवित्र परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। सच्चरित्र निर्माण मनुष्य का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए ।''**

पंडित जी के कथन की पूर्ति के लिए नैतिक शिक्षा का महत्व स्पष्ट हो जाता है । प्राचीन

काल में नैतिक शिक्षा के ही कारण गुरु का सम्मान करते हुए ब्रह्मचारी खेल-खेल में ही बहुत कुछ सीख जाता था । वह अपने आचार्य को समुचित ही नहीं अत्यधिक सम्मान देता था । इसके बदले में आचार्य भी अपने शिष्य को भरपूर ज्ञान का धनी बनाने का पुरुषार्थ करता था । आज की मैकाले शिक्षा पद्धति में यह सब लुप्त हो गया है । न तो आज का विद्यार्थी ही अपने अध्यापक को उचित सम्मान देने की इच्छा शक्ति रखता है तथा न ही आज का अध्यापक अपनी समस्याओं से ऊपर उठ कर विद्यार्थी का गुरु बनने का यत्न ही करता है। इसका कारण नैतिक शिक्षा का अभाव ही तो है । इसलिए आज के विद्यार्थी के लिए नैतिक शिक्षा का ज्ञान आवश्यक हो गया है । इसके बिना विद्यार्थी वास्तव में विद्यार्थी बन ही नहीं पाता । अतः आज का चाहे स्कूल हो अथवा कालेज, इसके प्रत्येक विद्यार्थी के लिए नैतिक शिक्षा की आवश्यकता से इंकार नहीं किया जा सकता । इसे भली प्रकार से नैतिक शिक्षा देकर, इसे अपनी नैतिक जिम्मेवारियों का ज्ञान देना आवश्यक हो गया है।

१०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट,
कौशाम्बी, २०१०१०
गाजियाबाद
दूरभाष : ०१२०-२७७३४००,
०९७१८५२८०६८

गुरुकुल हरिपुर में पंचम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ

गुरुकुल हरिपुर, जुनवानी जि० नुआपाड़ा में गत १०.०८.२०१४ को श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबंधन) के अवसर पर गुरुकुल के संचालक पूज्य डॉ० सुदर्शन देव आचार्य के सान्निध्य में तथा श्री दिलीप कुमार जिज्ञासु के ब्रह्मत्व में पंचम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ हुआ (जिसकी पूर्णाहुति गुरुकुल के पंचम वार्षिक महोत्सव के अवसर पर ३०,३१ जनवरी तथा १ फरवरी २०१५ को होगी ।) तथा गुरुकुल में अध्ययनरत २३ ब्रह्मचारियों का उपनयन व वेदारम्भ (विद्यारम्भ) संस्कार दो ब्रह्मचारी अध्ययन काल तक घर नहीं जाने का व्रत लेकर सेवाव्रती बने तथा सोनपुर जिला से पधारे चार महानुभाव वानप्रस्थ की दीक्षा से दीक्षित हुए ।

भवदीय
दिलीप कुमार जिज्ञास
आचार्य
गुरुकुल हरिपुर

श्रद्धेय आचार्य राजवीर शास्त्री दिवंगत

–श्री इन्द्रजित्देव, यमुनानगर

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली के अध्यक्ष व मासिक दयानन्द सन्देश के अवैतनिक एवं यशस्वी सम्पादक का देहान्त दिनांक २५ सितम्बर २०१४ ई० को हो गया । वे कुछ वर्षों से रोग ग्रसित थे । उनके देहान्त का समाचार पाकर आर्य जगत् शोक में डूब गया ।

वैदिक शास्त्रों के प्रौढ़ विद्वान् आचार्यवर राजवीर शास्त्री जी का जन्म सन् १९३८ में फजलगढ़ जिला गाजियाबाद में श्री शिवचरणदास जी के घर में हुआ था । गुरुकुल झज्जर में आपने अध्ययन किया था तथा कुछ समय वहाँ अध्यापन कार्य भी किया । तत्पश्चात् मेरठ विश्वविद्यालय से एम०ए० (संस्कृत) व वाराणसी से प्राचीन व्याकरण की परीक्षा उत्तीर्ण करके आचार्य बने । लोकेष्णा व वित्तेष्णा से निवृत श्रद्धेय आचार्यवर कई वर्षों तक दिल्ली प्रशासन के अधीन संस्कृत का अध्यापन कार्य भी करते रहे । लाला दीपचन्द आर्य जी द्वारा स्थापित आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में सेवारत रहते हुए अनेक ग्रन्थों का लेखन, संशोधन, अनुसन्धान व सम्पादन आदि सुकार्य कुशलतापूर्वक करते रहे जिनमें दयानन्द वैदिक कोष, यजुर्वेद देवतार्थ सूची, महर्षि दयानन्द वेदार्थ प्रकाश, दयानंद दिग्वियार्क, ईश, केन, कठ उपनिषद् भाष्य, योग मीमांसा, विशुद्ध मनुस्मृति, संस्कार विधिः, उपदेश मञ्जरी, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, आर्याभिविनय, पातंजल योग दर्शन भाष्यम्, षट्दर्शन पदानुक्रमणिका आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

आर्य समाज, सान्ताक्रुज, मुम्बई एवं परोपकारिणी सभा, अजमेर तथा कुछ अन्य वैदिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित श्रद्धेय श्री पं० राजवीर शास्त्री जी 'सरिता' द्वारा प्रकाशित वैदिक महापुरुषों व वैदिक सिद्धान्तों विषयक आलोचनात्मक लेखों के सप्रमाण व सटीक जो उत्तर दिया करते थे, वे बहुत पसन्द किए जाते थे । प्रामाणिक सृष्टि सम्वत् विषयक उनका विस्तृत लेख इतनी लोकप्रियता व मान्यता प्राप्त कर चुका है कि अब लगभग सभी वैदिक विद्वानों व पत्रिकाओं ने उसी सम्वत् को स्वीकार भी कर लिया है ।

पूज्य आचार्य जी अत्यन्त विनम्र, सत्याग्रही, सत्यान्वेशी एवं वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ थे । उनको सश्रद्ध विदाई देते मन कह रहा है –

मौत उसकी जमाना करे जिसका अफसोस ।

यूँ तो सभी आते हैं बारी बारी जाने के लिए ।।

आज आचार्य जी सशरीर हमारे मध्य नहीं रहे परन्तु हम जानते हैं – यशः शरीरम् न विनश्यति ।

–यमुना नगर

आर्य समाज नरवा पीताम्बरपुर

आर्य समाज नरवा पीताम्बरपुर का २४वां वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार का कार्यक्रम दिनांक १०,११ एवं १२ अक्टूबर को प्राथमिक विद्यालय नरवा पीताम्बरपुर के प्रांगण में उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ जिसमें प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक यज्ञ, प्रवचन एवं भजनोपदेश का कार्यक्रम था । अपराह्न ३ से ५ बजे तक विविध सम्मेलन एवं सायं ८ बजे से ११ बजे तक भजनोपदेश एवं प्रवचन का कार्यक्रम था ।

इस कार्यक्रम में आमंत्रित विद्वान् थे आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, पं० त्रियुगी नारायण पाठक गोरखपुर, पं० प्रदीप शास्त्री, श्रीमती सीता देवी आर्या जी एवं संत कुमार आर्य, कलकत्ता ।

कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री रवीन्द्रनाथ मिश्र, श्री अरविन्द मिश्र, श्री दिनेश मिश्र, श्रीराम नारायण जायसवाल, श्री संतोष मिश्र (राजू), श्री विनीत मिश्र, श्री इन्द्रमणि मिश्र एवं श्री रामसिरजन गौड़ प्रभृति का समुचित योगदान रहा ।

आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी के परामर्श से आगामी वर्ष २०१५-१६ के लिए नये पदाधिकारियों का चयन निम्न प्रकार हुआ, आगामी साधारण सभा में इसकी सम्पुष्टि एवं विस्तार किया जायेगा ।

प्रधान – श्री दिनेश मिश्र, **मंत्री** - श्री कृष्ण मोहन मिश्र, **कोषाध्यक्ष** - श्री राम सजीवन जायसवाल ।

आर्य वीर दल (पुरुष)

आर्य तीर दल - अधिष्ठाता - श्री दीपक मिश्र

आर्य वीर दल - अधिष्ठाता - श्री नीरज मिश्र

आर्य वीराङ्गना दल (महिला)

आर्य वीराङ्गना दल - श्रीमती दीपमाला आर्या

आर्य वीराङ्गना दल - सुश्री पूजा मिश्र

आर्य वीराङ्गना दल - सुश्री प्रियंका मिश्र

संरक्षक –

१. श्री रामराव मिश्र (राजू) पूर्व प्रधान

१. श्री संतोष मिश्र (राजू) पूर्व प्रधान

३. श्री इन्द्रमणि मिश्र - पूर्व उपप्रधान

४. श्री रवीन्द्रनाथ मिश्र

५. श्री अरुन मिश्र

६. श्री रामनारायण जायसवाल

कार्यक्रम के संयोजक – श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल, आर्य समाज कलकत्ता ।

''यदि ईश्वर वेद ज्ञान न देता तो मनुष्य पशुवत ही रह जाता''

–श्री खुशहाल चन्द्र आर्य

ईश्वर ने मनुष्य के सहयोग के लिए जिससे वह अपना जीवन सुचारू रूप से चला सके, इस उद्देश्य से सृष्टि की रचना की जिसमें सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, जल, वायु, समुद्र नदी-नाले, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि बनाए । सृष्टि रचने के बाद ईश्वर ने तिब्बत के पठार पर एक कृत्रिम गर्भाशय बना कर, उसमें रज-वीर्य का समावेश करके युवा लड़के-लड़कियाँ उत्पन्न की जिससे आगे भी सृष्टि चलती रहे । यदि ईश्वर मनुष्य उत्पत्ति के समय युवाओं को उत्पन्न न करके यदि बच्चे या वृद्ध पैदा करता तो बच्चों का पालन-पोषण कौन करता और वृद्धों से आगे का संसार नहीं चलता। इसीलिए नवयुवक व नवयुवतियाँ उत्पन्न की । ईश्वर ने मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ ही चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अँगिरा था, जिनके कर्म सर्वोत्तम होने से पुण्य आत्माएँ थीं, उनके मुख से चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं, इनको उनके मुख से उच्चारित करवाया । वैसे ये वेद, ईश्वरीय ज्ञान है, ऋषियों के मुख से तो केवल उच्चारित ही करवाया है । जैसे माईक में मनुष्य बोलता है, माईक तो केवल उसकी आवाज को तेज आवाज में प्रसारित कर देता है । ठीक इसी प्रकार ईश्वर, वेद ज्ञान को ऋषियों के हृदय में प्रकाशित कर देता है और ऋषियों ने उस ज्ञान को अपने मुख से उच्चारित करके सब मनुष्यों के सामने प्रकट कर दिया । वैसे तो वेद ज्ञान उपस्थित सभी लोगों ने सुना, पर ब्रह्मा ऋषि जो सबसे अधिक प्रखर और तीव्र बुद्धि वाले थे, उन्होंने वेद ज्ञान को सुन कर कण्ठस्थ कर लिया और फिर वे उपस्थित लोगों को सुनाने लगे । उपस्थित लोग अपने पुत्र व पौत्रों को सुनाने लगे । इस प्रकार यह परम्परा लाखों, करोड़ों वर्ष तक चलती रही । जब कागज, स्याही, कलम, दवात का आविष्कार हो गया तो यह चारों वेद लिपिबद्ध कर दिये गए । तब से अभी तक चले आ रहे हैं । इसीलिए वेदों का दूसरा नाम श्रुति भी है यानी सुनकर व सुनाकर चलने वाला ज्ञान । मैं यहाँ यह लिखना अति आवश्यक समझता हूँ कि वैदिक धर्म की महानता यह है कि यह ईश्वरीय ज्ञान होने से मानवमात्र का धर्म है । इसमें मानवमात्र के लिए ही नहीं बल्कि प्राणीमात्र के लिए भी कोई भेदभाव या कोई छोटा बड़ा नहीं है कारण ईश्वर सबका पिता है और सब जीव उसके पुत्रवत् हैं । इसलिए किसी प्रकार का भेदभाव होने का प्रश्न ही नहीं उठता । बाकी जितने भी मत, पंथ, सम्प्रदाय हैं जिनको धर्म भी कहा जाता है, वे सब मनुष्यों के बनाए हुए हैं । मनुष्य चाहे कितना भी महान् क्यों न हो, परन्तु मनुष्य होने के नाते अल्पज्ञ प्राणी है । उसमें अपना और पराये का भेदभाव कम या अधिक अवश्य रहेगा। इसीलिए अन्य जितने भी मत, पंथ व सम्प्रदाय हैं, वे अपने ही मानने वालों का पक्ष लेते हैं यानी उनके ही हित चिन्तक हैं, दूसरों के नहीं । पर वैदिक धर्म ही एक मानवीय धर्म है जो सबके लिए समान है ।

इसी विषय को आगे बढ़ाते हुए यह लिखना उचित है कि ईश्वर ने मनुष्य को पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ दी हैं, उनके लिए ईश्वर ने पाँच जड़ देवता जिनको तत्व भी कहते हैं, दिये हैं । जिनके द्वारा ज्ञानेन्द्रियों में वह शक्ति आती है जिससे वे अपना काम कर पाती है । जैसे आँखों के लिए ईश्वर ने जड़ देवता अग्नि बनाया है जिससे आँखें रूप देख पाती हैं । इसी प्रकार कानों के लिए आकाश बनाया है जिससे कान शब्दों को सुनता है । नाक के लिए पृथ्वी बनाई है जिससे नाक गन्ध या दुर्गन्ध का ज्ञान करता है। जिह्वा के लिए ईश्वर ने जड़ देवता पानी बनाया है जिससे वह रस का अनुभव कर सके । त्वचा के लिए हवा बनाया है जिससे त्वचा स्पर्श का अनुभव कर सके । यह पाँचों तत्व ईश्वर मनुष्य की उत्पत्ति

से पहले ही बना देता है । मनुष्यों में एक इन्द्रिय और होती है जिसे बुद्धि कहते हैं । यह मनुष्यों में अन्य जीवों से अधिक होती है । इस बुद्धि के लिए ईश्वर ने वेद ज्ञान दिया है जिसके पढ़ने व सुनने से बुद्धि में ज्ञान की वृद्धि होती है और वेद ज्ञान से बुद्धि यह समझ पाती है कि मुझे क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए । वेद ज्ञान, मनुष्य का बुद्धि के द्वारा पथ-प्रदर्शन करता है जिससे वह अच्छे व पुण्य कार्यों को करता हुआ मोक्ष की ओर अग्रसर होता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है यह मनुष्य योनि में ही प्राप्त होता है । जैसे एक वैज्ञानिक कोई मशीन बनाता है, तो उसका कैसे प्रयोग किया जावे इसके लिए वह प्रयोग करने की विधि या तरीका एक छोटी पुस्तक में लिख देता है जिसको देखकर उस मशीन का प्रयोग करने वाला प्रयोग करता है, इसी प्रकार ईश्वर ने मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ ही यह वेद ज्ञान दे दिया जिसको पढ़कर या सुनकर अपने व दूसरों के जीवन को सुचारू रूप से चला सके और अन्त में मोक्ष को प्राप्त कर सके।

यहाँ आपको यह बताना बहुत जरूरी है कि जीवों में दो किस्म का ज्ञान होता है । एक स्वाभाविक दूसरा नैमित्तिक । स्वाभाविक ज्ञान पशु-पक्षियों में अधिक होता है कारण उनको इसी ज्ञान से पूरा जीवन व्यतीत करना होता है । इस ज्ञान से जीव खाना-पीना, सोना-जागना, उठना-बैठना तथा बच्चे पैदा करना ही नित्य कर्म कर सकता है, इसका जीव को कोई फल नहीं मिलता । नैमित्तिक ज्ञान वह होता है जो सीखने से सीखा जाये । यह ज्ञान पशु-पक्षियों में बहुत कम और मनुष्यों में बुद्धि अधिक होने के कारण यह ज्ञान भी अधिक होता है । कारण इस ज्ञान का बुद्धि से सम्बन्ध है । आप देखते होंगे कि कुत्ता का बच्चा, पैदा होते ही पानी में तैरने लग जाता है कारण यह कुत्ते के लिए स्वाभाविक ज्ञान है । पर मनुष्य का बच्चा, पैदा होते ही पानी में नहीं तैर सकता । यदि पानी में छोड़ोगे तो वह डूब जायेगा और जब तक इसको तैरना सिखाया नहीं जायेगा तब तक वह पानी में नहीं तैर सकेगा कारण यह मनुष्य के लिए नैमित्तिक ज्ञान हैं ।

मनुष्य का स्वाभाविक ज्ञान, खाने-पीने, सोने-जागने, उठने-बैठने तक ही सीमित है । बाकी काम वह सिखाने से सीखता है । स्वाभाविक ज्ञान के कार्यों में मनुष्य को भी फल नहीं मिलता, बाकी नैमित्तिक ज्ञान से किये हुए अच्छे या बुरे कार्यों का ईश्वर मनुष्य को अच्छे कार्यों का सुख के रूप में, बुरे कार्यों का दुःख के रूप में फल देता है । मनुष्य की पढ़ाई, लिखाई सब नैमित्तिक ज्ञान से होती है । इसीलिए ईश्वर ने मनुष्य को अपना तथा दूसरों के जीवन को सुखी व उन्नत बनाने के लिए उसे क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए । इसीलिए ईश्वर ने मनुष्य की उत्पत्ति करते ही, उसे चार ऋषियों द्वारा चार वेदों का ज्ञान दे दिया । जिनको सुनकर या पढ़कर वह अपने जीवन को, शुभ कार्यों को करते हुए उत्तरोत्तर उन्नत व समृद्धशाली बना सके, साथ ही अष्टांग योग द्वारा यम, नियमों को जीवन में धारण करते हुए, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान को करते हुए समाधि का आनन्द ले सके और मृत्यु के बाद मोक्ष के परम आनन्द को ईश्वर के सान्निद्ध में रहते हुए प्राप्त कर सकें जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है । इसके बाद मनुष्य की कोई इच्छा बाकी नहीं रह जाती है यानी यह मनुष्य की अन्तिम इच्छा है । यदि ईश्वर प्रारम्भ में ही मनुष्यों को वेद ज्ञान नहीं देता, तो मनुष्य भी अन्य पशु-पक्षियों की भाँति असभ्य रूप में रहता हुआ पशुवत् ही अपना जीवन व्यतीत करना । इसलिए सभी मनुष्यों को अभीष्ट है कि वह वैदिक धर्म को अपनाकर अपने व अन्यों के जीवन को उन्नत व सफल बनावे ।

गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स

१८० महात्मा गाँधी रोड़
(दो तल्ला), कोलकाता-७

फोन-२२१८३८२५, ६४५०५०१३
मो० : ९८३०१३५७९४

दिवंगत श्री घनश्याम मौर्य

श्री घनश्याम मौर्य जी का जन्म २३ जुलाई १९५१ ई० को ग्राम-कोदईकापुरा, पो०-भटौनी, जिला-आजमगढ़ (उ०प्र०) में हुआ था । आपके पिताजी का नाम शिवहरख मौर्य था । इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव पर ही हुई थी । पीछे जब कोलकाता आये तो आर्य विद्यालय में अध्ययन आरम्भ किया। इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी०काम० पास किया था । ये अपना व्यक्तिगत व्यवसाय तो करते ही थे साथ ही साथ प्राइवेट कंपनियों में कन्सलटेन्ट एडवाईजर और डायरेक्टर के रूप में सेवा करते आ रहे थे ।

श्री घनश्याम मौर्य जी अपने आर्य विद्यालय की शिक्षा के समय से ही आर्य समाज के सम्पर्क में आ गये । आर्य विद्यालय में वैदिक धर्म की शिक्षा पाठ्यक्रम में सम्मिलित है । गायत्री मन्त्र, स्वामी जी की जीवनी, आर्य समाज के नियम आदि विद्यालय में पढ़ा दिये गये थे ।

कालेज की पढ़ाई के दिनों में आर्य समाज से विधिवत् जुड़ गये और आर्य समाज के सदस्य बन गये । इनकी योग्यता और लगन से प्रभावित होकर आर्य समाज ने इन्हें अपनी अन्तरंग सभा में सम्मिलित कर लिया । १९८५ ई० में पुस्तकाध्यक्ष निर्वाचिंत हुए तब से निरन्तर अन्तरंग के सदस्य एवं समय-समय पर हिसाब परीक्षक, उपमन्त्री, उपप्रधान, आदि पदों पर रहकर आर्य समाज की सेवा करते आ रहे थे ।

श्री मौर्य जी सभा समितियों में कोलकाता महानगर में अनेक जगहों पर सम्मिलित होते रहते थे । आपकी अभिरुचि धार्मिक एवं सामाजिक विषयों में थी ।

आर्य समाज में आकर घनश्याम जी ने अपना जीवन बदला और परिवार के सदस्यों में अभिरुचि जगी । आप आर्य कन्या महाविद्यालय के प्रबन्धकारिणी समिति के अभिवावक सदस्य (अभिभावक कु० अनामिका आर्य एकादश श्रेणी) के रूप में आर्य समाज कलकत्ता से मनोनीत थे। श्री घनश्याम जी की और भी पुत्रियाँ सन्तानें हैं जिन्हें उन्होंने उच्च शिक्षा दिलायी । घनश्याम मौर्य जी पूरी निष्ठा के साथ आर्य समाज के कार्यों में जुड़े रहते थे ।

सन् १९६०-७० के दशक में प्रो० श्याम कुमार राव (वर्तमान-स्वामी अग्निवेश जी) जी ने आर्यसमाज कलकत्ता में वाद-विवाद सभा का गठन किया था जिसमें विभिन्न विषयों पर वक्तागण पक्ष व विपक्ष में अपने वक्तव्य रखते थे । इस कार्यक्रम का उद्देश्य था स्वाध्याय के प्रति लोगो को प्रेरित करना तथा अपने वक्तृत्व शैली को विकसित करना । श्री घनश्याम मौर्य जी उस वाद-विवाद प्रतियोगिता में सम्मिलित होते रहते थे । इस वाद-विवाद प्रतियोगिता को विगत एक-दो वर्षो से श्री योगेशराज उपाध्याय जी के संयोजकत्व में पुनःप्रारम्भ किया गया है । २८ सितम्बर २०१४ रविवार को सत्संग के पश्चात् ऐसे ही एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था जिसका विषय था **''शाकाहार मनुष्य का स्वाभाविक आहार है''** तीन प्रतियोगी अपने विचार प्रस्तुत कर चुके थे । चौथे प्रतियोगी के रूप में श्री घनश्याम मौर्य जी ने अपना वक्तव्य आर्य समाज की वेदी से देना प्रारम्भ किया । अपने विषय के समर्थन में अनेक तर्क तथा उदाहरणों के साथ धाराप्रवाह एवं प्रभावी वक्तव्य आपने प्रस्तुत किया । सम्भवतः उस दिन यह उनका सर्वोत्तम वक्तव्य था । वक्तव्य देने के उपरान्त जब कुर्सी पर उन्होंने अपना स्थान ग्रहण किया तत्काल उनकी अवस्था अचानक बिगड़ने लगी तथा तीन चार मिनट में ही हृदयगति अवरुद्ध हो जाने कारण आपका शरीर शान्त हो गया ।

दिनांक ५ अक्टूबर २०१४ रविवार को आर्य समाज कलकत्ता के सभागार में आर्य समाज कलकत्ता के पूर्व प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान श्री श्रीराम आर्य जी की अध्यक्षता में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें वक्ताओं ने स्व० घनश्याम मौर्य जी के सरल व संघर्षमय जीवन तथा आर्य समाज के प्रति उनकी निष्ठा एवं लगन पर प्रकाश डालते हुए उनके प्रति अपने श्रद्धासुमन प्रकट करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की । श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में थे — पं० आत्मानन्द शास्त्री, पं० देवनारायण तिवारी, पं० योगेशराज उपाध्याय, पं० देवव्रत तिवारी, मन्त्री सत्यप्रकाश जायसवाल, आचार्य ब्रह्मदत्त आर्य जी (गुरुकुल कोलाघाट), श्री अजय गुप्ता एडवोकेट, श्री विवेक जायसवाल (युवा शाखा), श्री नन्दलाल सेठ, सुश्री ममता मौर्या, आर्य समाज बड़ाबाजार के पूर्व प्रधान श्री चांदरतन दम्मानी तथा श्री कृष्ण कुमार जायसवाल ।

सत्य प्रकाश जायसवाल

मन्त्री

आर्य समाज कलकत्ता

आर्य जगत् के योगनिष्ठ संन्यासी, वैदिक विद्वान्, समर्पित व सरल व्यक्तित्व
पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी के ७५वें जन्मोत्सव पर
राष्ट्रीय स्तर पर राजधानी दिल्ली में अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह

रविवार १६ नवम्बर, २०१४ प्रात: १० से २ बजे तक

स्थान : योग निकेतन, रोड नं०-७८, पश्चिमी पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

आर्य समाज के समस्त संन्यासी, विद्वान्, नेता एवं पदाधिकारी इस अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द जी को शुभकामनाएँ प्रदान करेंगे तथा यथेष्ट सम्मान राशि, शॉल, श्रीफल एवं सम्मान पत्र भेंट कर उनका सार्वजनिक अभिनन्दन करेंगे ।

अपील : स्वामी दिव्यानन्द जी को सम्मान स्वरूप इस अवसर पर एक थैली भेंट की जायेगी जिसके लिए आप अपना सहयोग क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा **स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अभिनन्दन समिति** के नाम से निम्न पते पर भिजवाने की कृपा करें । आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं ।

इस अवसर पर स्वामी जी के सम्मान में अभिनन्दन ग्रन्थ भी भेंट किया जाना है जिसका सम्पादन डॉ० सुरेन्द्र सिंह कादियाण कर रहे हैं । स्वामी जी से परिचित महानुभावों से अपील है कि उनके बारे में अपने संस्मरणात्मक लेख अथवा कविता अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशानार्थ यथाशीघ्र भेजें। वेद, महर्षि दयानन्द, आर्य समाज, यज्ञ, योग के सम्बन्ध में रचनाएँ सादर आमंत्रित हैं । कृपया अपनी रचना निम्न पते पर भेजें ।

डॉ॰ सुरेन्द्र सिंह कादियाण, सम्पादक-स्वामी डॉ॰ दिव्यानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ
स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अभिनन्दन समिति
मुख्यालय : पातंजल योगधाम, आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार-२४९४०७ (उत्तराखण्ड)
शाखा कार्यालय : महर्षि दयानन्द भवन, ३/५ आसफ अली रोड़, नई दिल्ली-२
दूरभाष : ०११-२३२७४७७१ २३२६०९८५
ई-मेल : sarvadeshik@gmail.com, aryayouth@gmail.com

मानव-जीवन में प्राणायाम एवं नाड़ी-शोधन की महिमा

–श्रीमती मृदुला अग्रवाल

ईश्वर सर्वत्र परिपूर्ण एवं सर्वव्यापक है । जब कभी कोई योगी पुरुष अपने मन एवं इन्द्रियों का निरोध करके ईश्वरानन्द की धारा को या परमात्मा के साक्षात्कार को प्राप्त करने की चेष्टा करता है, तब वह प्राणायाम द्वारा सर्वरक्षक परमात्मरूप यज्ञकुण्ड में अपने दस प्राणों की आहुति प्रदान करता है ।

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे ।
प्राणापानगति रुद्ध्वा प्राणायमपरायणाः ।। —गीता, अध्याय-४, श्लोक-२९

कुछ योगीजन अपानवायु में प्राणवायु को हवन करते हैं, अन्य योगीजन प्राणवायु में अपानवायु को हवन करते हैं तथा अन्य योगीजन प्राण और अपान की गति को रोककर प्राणायाम के परायण होते हैं ।

ऋच वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये । साम प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये । वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ ।। —यजुर्वेद, अध्याय-३६, मन्त्र-१

अर्थात् — हे विद्वानों । तुम लोगों के संग से मेरी आत्मा में प्राण और अपान ऊपर नीचे श्वास दृढ़ हों, मेरी वाणी मानस बल को प्राप्त हो, उस ऋग्वेद रूप वाणी और उन श्वासों के साथ मैं शरीर बल को प्राप्त होऊँ । मनन करनेवाले अन्तःकरण के तुल्य यजुर्वेद को प्राप्त होऊँ । प्राण की क्रिया अर्थात् योगाभ्यासादिक उपासना के साधक सामवेद को प्राप्त होऊँ । उत्तम नेत्र एवं श्रेष्ठ कान सहित स्वस्थ और सब उपद्रवों से रहित समर्थ शरीर को प्राप्त होऊँ ।

''प्राणापानौ मृत्योर्मा पातं स्वाहा ।।'' —अथर्ववेद, काण्ड-२, सूक्त-१६, मन्त्र-१

पदार्थ — (प्राणापानौ) हे प्राण और अपान ! तुम दोनों (मृत्योः) मृत्यु से (मा) मुझे (पातम्) बचाओ, (स्वाहा) यह सुन्दर वाणी (आशीर्वाद) हो ।

भावार्थ :— मनुष्य ब्रह्मचर्य, व्यायाम, प्राणायाम्, पथ्य भोजन आदि से प्राण अर्थात् भीतर जाने वाले श्वास, और अपान, अर्थात् बाहिर आनेवाले श्वास की स्वस्थता स्थापित करें एवं बलवान् रहकर चिरंजीवी होवें ।

अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती । व्यख्यन्महिषो दिवम् । सामवेद, मन्त्र-६३१

प्राण और अपान आदि क्रियाओं का संचालन करता हुआ इस परमात्मा का प्रकाश विश्व में व्यापक हो रहा है । महान् परमेश्वर सूर्य की चमक जब मुख्य प्राण को प्रेरित करती है, तभी प्राणीमात्र के शरीरों में वायु का ऊपर-नीचे जाना आदि व्यवहार होता है ।

शतपथ में कथन है **प्राणो थर्वा** (शतपथ ६-४-२-२) अर्थात् प्राण अथर्वा है । अभिप्राय यह है कि प्राणायम् द्वारा ब्रह्मप्राप्ति भी हो सकती है ।

वेदों में, उपनिषदों में, गीता में या अन्य आध्यात्मिक ग्रन्थों में प्राणायाम् को ही ब्रह्मप्राप्ति, आत्मिक आनन्द या ईश्वरानन्द की धारा को प्राप्त करने का श्रेष्ठतम साधन बताया है । प्राणायाम् द्वारा ही मानव देह में नाड़ियों की शोधनक्रिया भी होती है । यही प्राणायाम् की क्रिया योगी को मधुरतादायक मोक्ष की ओर ले जाती है । इस प्रकार की स्तुति आध्यात्मिक यज्ञ भी कहलाती है । ऐसा यज्ञ जो ज्ञानी पुरुष को **सप्तनद्यः** से अर्थात् ७ नाड़ियों (इड़ा, पिंगला, सुषुम्णा आदि) के द्वारा प्राणों का संयम करके प्राप्त होता है । यहाँ नाड़ियों की तुलना नदियों से की है ।

मनुष्य-शरीर में ये ७ नाड़ियाँ—जो भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम् की प्रतीक

हैं—कुम्भक, रेचक, पूरक इन तीन प्राणायमों के द्वारा २१ प्रकार की बन जाती हैं अर्थात् सप्तत्रेधा-२१ धाराओं में विभक्त हो जाती हैं।

''स सप्त धीतिभिर्हितो नद्यो अजिन्वदद्रहः।'

या एकमक्षि वावृधुः ।।'

—ऋग्वेद, मंडल-९, सूक्त-९, मन्त्र-४

पदार्थ – वह परमात्मा इडा, पिंगलादि सात नाड़ियों को ''नदन्तीति नद्यः'' **धीयते सर्वकर्मसु इति धीतिर्बुद्धिः** जब बुद्धि की वृत्तियों से धारण किया जाता है तो योग द्वारा नाड़ियों को तृप्त करता है एवं वे नाड़ियाँ स्वकर्तव्य पालन करती हुई उस एक अविनाशी परमात्मा के भाव को मानव अन्तःकरण में प्रकाशित करती हैं।

ऋग्वेद में ऋषि ने सिन्धु नदी की स्तुति करते हुए, उसकी उपमा जीवात्मा से की है, जो कि प्राणायम द्वारा भूः से सत्यम् तक विचरण करता रहता है। उसका यही विचरण ही उसे ब्रह्मरन्ध्र तक पहुँचाकर ईश्वरानन्द की धारा की अनुभूति कराता है। आधार चक्र से २ अंगुल ऊपर और लिंग से २ अंगुल नीचे, देह के मध्यप्रदेश में एक पतली अग्निशिखा है। वहाँ से कुछ दूरी पर ब्रह्मग्रन्थि स्थित है। उसके मध्य में १२ दलों वाला नाभिचक्र है। यहीं पर जीव तन्तुजाल में स्थित मकड़ी की तरह घूमता रहता है। सुषुम्ना से होकर वह ब्रह्मरन्ध्र का आरोहण-अवरोहण करता रहता है।

ब्रह्मरन्ध्र में अमृत धारण करने वाला सहस्रार चक्र है जो ईश्वरानन्द रूपी सुधा धाराओं से शरीर का पोषण करता है। बंगाल के एक सुप्रसिद्ध साधक श्री श्री श्यामाचरण लाहिड़ी ने अपनी दैनिक डायरी में लिखा कि उन्होंने शीतली प्राणायम द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार किया। उनका यह प्राणायम कुछ इसी प्रकार का था, जैसे जीव भूः से सत्यम् तक एक आरोहण-अवरोहण करता है और इसी समय एक ध्वनि उत्पन्न होती थी जो कि, ऋग्वेद मंडल-१०, सूक्त-७५, मन्त्र-३ के अनुसार सिन्धु **''वृषभो न रोरुवत्,''** इस प्रकार चलता है मानो बिजार (साँड) गरज रहा है, अथवा बैल की तरह दहाड़ता है। यह भी आध्यात्मिक ध्वनि ही है जिसका वर्णन निम्नलिखित है :—

''ब्रह्मरन्ध्र गते वायौ नादश्चोत्पद्यतेऽनद्य। शंख ध्वनि निमश्रायो मध्ये मेघध्वनिर्यथा।''

—(जाबाल द० उपनिषद खंड-६)

आध्यात्मिक पुस्तकों में नाड़ियों का वर्णन इस प्रकार विद्यमान है :—

केन्द्र मध्य स्थिता नाड़ी सुषुम्नेति प्रकीर्णिता, द्विसप्तति सहस्राणि तासां मुख्या ऋतुर्दश ।।

सुषुम्ना पिंगला इड़ा चैव सरस्वती पूषा च वरुणा चैव हस्तिजिह्वा यशस्विनी।

अलम्बुषा कुह चैव विश्वोदरी तपःस्विनी, तिष्ठन्ति परितस्तस्यां नाड़या हि मुनिपुंगव।

शांखिनी चैव गांधारा इति मुख्याश्चतुर्दश ।।

—जाबाल दर्शनोपनिषद चतुर्थ खंडः

सुषुम्ना के चारों ओर व्याप्त नाड़ियां ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त ब्रह्म-ग्रन्थि को ग्रथित करके शरीर का विस्तार करती है। उनमें उपरोक्त १४ नाड़ियां प्रधान हैं। इनमें प्रथम तीन नाड़ी मुख्य हैं। इन तीनों में सुषुम्ना ही श्रेष्ठ है। उस ब्रह्मग्रन्थि के मध्य में क्रम से बायीं और दायीं ओर इडा और पिंगला नाड़ियां स्थित हैं। सुषुम्ना के दोनों ओर क्रम से सरस्वती और कुछ नामक नाड़ियां हैं। इड़ा के पश्चिम (पीछे) तथा पूर्व (अग्रिम) भाग में गांधारा और हस्तिजिह्वा तथा इसी प्रकार पिंगला के पश्चिम और पूर्व भाग में पूषा

और यशस्विनी नाड़ियां स्थित हैं । कुछ और हस्तिजिह्वा के मध्य में विश्वोदरी तथा कुछ और यशस्विनी के मध्य में वरुणा नामक नाड़ियां स्थित हैं । पूषा और सरस्वती के मध्य में तपःस्विनी तथा गांधारा और सरस्वती के मध्य में शांखिनी नाड़ी स्थित है ।

कन्दमध्य में अलम्बुषा नाड़ी है । इन नाड़ियों में इड़ा और पिंगला क्रम से बायीं और दायीं सीधी नासिका-पर्यन्त और कुछ लिंग पर्यन्त है । सरस्वती जिह्वा - पर्यन्त, गांधारा पृष्ठ-प्रदेश-पर्यन्त, हस्तिजिह्वा बाएँ नेत्र से लेकर बाएँ पैर के अंगूठे तक, वरुणा सम्पूर्ण प्रदेश में, यशस्विनी अंगूठा से लेकर दक्षिण पैर तक तथा विश्वोदरी अखिल देह में स्थित रहती है । शांखिनी बाएँ कान पर्यन्त, पूषा दक्षिण नेत्र पर्यन्त, तपःस्विनी दक्षिण कान तक तथा अलम्बुषा गुद-मूल तक स्थित है ।

तृष्टामया प्रथमं यातवे सजूः सुसर्त्वा रसया श्वेत्या त्या ।
त्वं सिन्धो कुभया गोमतीं क्रुमुं मेहत्न्वा सरथं याभिरीयसे ।।

—ऋग्वेद, मंडल-१०, सूक्त-७५, मन्त्र-६

भावार्थ – १—तृष्टामा, २—सुसर्तु, ३—रसा, ४—श्वेत्या, ५—कुभा, ६—गोमती, ७—क्रुमु, ८—महत्नू ये ८ नाड़ियां वेद ने और कही है । इनके साथ योग करके आत्मा अनेक देह के कार्यों का सम्पादन करता है । जैसे तृष्टामा नाड़ी से आमाशय भोजन को पचाता है, सुसर्तु के योग से देह के समस्त रसों को अपने-अपने स्थानों पर भेजता है, रसा नाड़ी से समस्त देह में रस व्यापता है, श्वेत्या से दुग्धवत् रस पक्वाशय से छाती में आकर रक्त से मिलता है, 'कुभा' नाम नाड़ी जाल से देह की त्वचा का निर्माण करती है, गोमती से वाणी का उच्चारण वा इन्द्रिय शक्तियों को वश करता है। 'क्रुमु' देह के अंगों के चलने की व्यवस्था करता है, 'महत्नू' नाड़ी से मूत्र बनने और निकलने की व्यवस्था करता है ।

–श्री जयदेव विद्यालंकार मीमांसा तीर्थ के भाष्य से ।

उक्त नाड़ियों की साधना से **'अदब्धा सिन्धु'** अर्थात् अविनाशी आत्मा का रूप निखर जाता है । इस मानव देह में बुद्धिमान लोग प्राणायमों द्वारा इन नाड़ियों को तृप्त कर मुक्ति को प्राप्त कर लेते हैं यह सब ध्यान एवं चित्त की एकाग्रता का परिणाम है, जो प्रत्येक मनुष्य के लिये सुलभ नहीं है। फिर भी प्रत्येक मनुष्य को योग्य है कि अपने आत्मा में ज्ञान का प्रकाश करके, सर्व व्यवहारों में चतुर होकर, वेदरूपी मार्गों में चलकर आध्यात्मिक आनन्द रूपी मधु को अपने हृदय में स्थापित करें । अपने अंगों से शुभ कर्मों को करके प्रतिष्ठा बढ़ावें, क्योंकि ज्ञानी महात्मा पुरुष जो श्वास लेते हैं वह संसार के उपकार के लिये ही लेते हैं । इसी प्रकार हम भी प्रतिक्षण परोपकार में लगकर अपना सामर्थ्य बढ़ावें एवं जीवन को आत्मिक आनन्द की धाराओं से धन्य करें ।

प्राण और अपान के संयम से मनुष्य शत्रुओं से नहीं दबता, उन्हें दबा सकता है, अन्याय को रोककर न्यायधर्म का प्रचार कर सकता है । प्राणायम द्वारा मानव जीवन के सब संकट कट जाते हैं। अपार वैभव वा महिमा भी प्राप्त होता है । शुद्ध और शान्त स्थान पर प्राणायम करते हुए परमेश्वर का ध्यान करने से हमारे तन-मन बुद्धि और आत्मा शान्त तथा पवित्र होते हैं । योग साधना में लीन होकर योगी महिमायुक्त हो जाता है ।

१९ सी, सरत बोस रोड़
कोलकाता-७०००२०
मो० - ९८३६८४१०५१

महाजाति सदन के ऐतिहासिक शिलान्यास के क्षणों में श्री सुभाषचन्द्र बोस के निकट श्री विंजय सिंह नाहर के साथ अन्यतम प्रिय सार्थी के रूप में श्री आनन्दीलाल पोद्दारजी ।

प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र बाबू का कलकत्ता आगमन हुआ, तो प्रमुख नागरिकों के बीच वे आनन्दीजी से भी मिले ।

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए पं० उमाकान्त उपाध्याय, एम०ए० द्वारा प्रकाशित तथा एशोशियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रो, कोलकाता-६ में मुद्रित । मो. : ९८३०३७०४६३